क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277to 81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 314 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या .....

दिनाँक :

प्रकाशनार्थ

श्रद्धेय श्री आत्मन् ,

आपसे विनम्र निवेदन है कि अधोलिखित समाचार को प्रकाशित करें जिससे शहरी व ग्रामीण अंचल के रहने वाले लोगों को क्रियायोग कार्यक्रम के विषय में पता चले जिससे वे सभी लोग जो परेशानी में हैं, कार्यक्रम में भाग लेकर कष्ट मुक्त हो सकें।

वारी गाँव में आयोजित क्रियायोग का वृहद् कार्यक्रम

9 मई 2014 इलाहाबाद। भारतीयता को सच्चे स्वरूप में प्रकट करने का समय आ गया है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए श्री परमहंस योगानन्द जी ने 7 मार्च 1952 को रात्रि 9:30 बजे बिल्टमोर होटल में महासमाधि के ठीक पूर्व दिये गये संदेश में पूरे विश्व को स्पष्ट किया अब क्रियायोग के प्रचार-प्रसार का काम पश्चिम जगत में पूरा हो गया है। हे भारत, मैं वहीं आ रहा हूँ .... की भविष्यवाणी के साथ श्री परमहंस योगानन्द जी ने 50 देशों के दूतावास के राजदूत व अन्य गणमान्य अधिकारियों के सम्मुख महासमाधि में प्रवेश करके भारत की भारतीयता को प्रकट किया। पूरे जीवन श्री परमहंस योगानन्द जी ने ईश्वर अनुभूति का मार्ग दिखाते हुए यह सिद्ध कर दिया कि ईश्वर भक्त की शरीर पावन गंगा की पवित्र धारा की तरह विकाररहित होती है। महासमाधि के कई सप्ताह के बाद तक श्री परमहंस योगानन्द जी की शरीर में कोई दुर्गन्ध नहीं आयी। चमड़े में शुष्कता नहीं आयी और ओठों पर ईश्वरीय मुस्कान पूरे समय तक बनी रही।

श्री परमहंस योगानन्द जी की भविष्यवाणी क्रियायोग के प्रचार-प्रसार के द्वारा पूरी तरह से व्यक्त हो रही है। क्रियायोग ध्यान वही ज्ञान है जिसे सहस्त्राब्दियों पूर्व योगेश्वर श्रीकृष्ण ने दिया था। बाद में

- शेष पेज 2 पर

यही ज्ञान प्रभु ईसा मसीह, संत कबीर दास, नानक देव आदि को प्राप्त हुआ। उचित समय के आगमन पर यह क्रियायोग ज्ञान योगावतार श्री लाहिड़ी महाशय जी के द्वारा सन् 1861 में मनुष्य जाति को प्राप्त हुआ। क्रियायोग ध्यान को पूरी भक्ति से करने पर मनुष्य के जन्मों-जन्मों की इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं और एक ही जन्म में वह सच की पूर्ण अनुभूति कर लेता है कि दृश्य व अदृश्य सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड परमात्मा की शक्ति का विकास है।

पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष (2014 में) भी क्रियायोग का कार्यक्रम पुनः ग्रामीण अंचल में शुरु हो गया है। इस वर्ष का प्रथम ग्रामीण कार्यक्रम सहसो बाजार से 5 किमी0 दूर वारी गाँव के प्राथमिक विद्यालय में शुरु हुआ है। आज कार्यक्रम का दूसरा दिन है।

क्रियायोग के विषय में बताते व क्रियायोग का अभ्यास कराते हुए क्रियायोग वैज्ञानिक अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि क्रियायोग के अभ्यास से मनुष्य अहिंसा के आभामण्डल से आच्छादित हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह सच की अनुभूति करता है। क्रियायोग के अभ्यास से मनुष्य इस मंत्र को सिद्ध करने में सफल हो जाता है कि साच को आँच नहीं। क्रियायोग का गाँव-गाँव व शहर-शहर विस्तार करके पूरे भारतराष्ट्र में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में सत्य व अहिंसा के प्रकाश को फैलाना है। जैसे-जैसे क्रियायोग का विस्तार होगा वैसे-वैसे देश की व्यवस्था बदलेगी। जिस समय क्रियायोग का दीप भारत के अधिकांश घरों में जलने लगेगा, उस दिन भारत में नया संविधान, नई शिक्षा नीति, नई न्यायपालिका की स्थापना होगी। पूरा राष्ट्र भयरहित होगा। लोगों की आवश्यकताएँ आसानी से पूरी होंगी।

वारी गाँव के प्राथमिक विद्यालय में अपराहन 4:30 बजे से 7:30 बजे तक आयोजित क्रियायोग सत्संग सभा में ग्रामीण लोगों के साथ-साथ शहर के लोगों ने भी भाग लिया और कार्यक्रम में अमरीका, कनॉडा, ब्राजील व सिंगापुर से आये हुए इंजीनियर, अधिवक्ता व प्रोफेसर आदि लोगों ने भाग लिया। सभी को कार्यक्रम से नई आशा जगी है। क्रियायोग का कार्यक्रम प्रतिदिन चलेगा। आने वाले 3 वर्षों के अंदर पूरे उ0प्र0 में कार्यक्रम फैलाने की योजना बनी है।

- योगमाता